**International Journal of Social Science and Humanities**
**www.humanitiesjournals.com**
**Online ISSN: 2664-8628 Print ISSN: 2664-861X**
**Received: 22-12-2024, Accepted: 21-01-2025, Published: 05-02-2025**
**Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 29-31**

# प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की समीक्षा

**भरत कुमार**
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग, महात्मा गांधी महाविद्यालय, गिड़ा जिला, बालोतरा, राजस्थान, भारत

**सारांश**
विश्व के प्रत्येक देश में लोगों को इतिहास की समझ एक समय पर नहीं हुयी है बल्कि इसका ज्ञान अलग–अलग समय पर हुआ है। किसी भी देश का अपना कुछ न कुछ इतिहास होता है जिसके विषय में सुचनाएँ हमें समकालीन मनीषियों के द्वारा लिखे गये साहित्यों में से होती है किन्तु इस प्रकार के साहित्य में कौन सी सामाग्री इतिहास लेखन में सहायक सिद्ध होगी इसका निर्धारण कर पाना कठिन कार्य है। इतिहास लेख या इतिहासिकी का शाब्दिक अर्थ इतिहास लेखन की कला है। दुनिया के विभिन्न जन समुदायों और विभिन्न कालों में अतीत का जिज्ञासु बोध यानी ऐतिहासिक बोध एक समान मौजूद नहीं रहा है। प्राचीन यूनान एवं रोम तथा यहूदी एवं इसाई धर्मो ने युरोप से शक्तिशाली इतिहास बोध विरासत में लिया है किन्तु प्राचीन भारत में इतिहास बोध को देखा जाये तो इस सम्बन्ध में विद्वानो में काफी मतभेद है। विद्वानों का एक बड़ा वर्ग मानता है कि प्राचीन भारत में भारतीयों को इतिहास लेखन की समझ नहीं थी। इस प्रकार की सोच रखने वाले विद्वानों में विन्टर निट्ज मैक्समूलर आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। इस मान्यता के विपरीत विद्वानों का एक वर्ग यथा, डा. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, डा विश्वम्भर शरण पाठक, नीलकंठ शास्त्री आदि ने अपनी कृतियों के माध्यम से प्रमाणित करने का प्रयास किया कि भारतीय इतिहास लेखन की कला से परिचित थे।

**मुख्य शब्दः** प्राचीन, भारत, इतिहास, लेखन, समकालीन समीक्षा आदि

कसी भी देश का अपना कुछ न कुछ इतिहास होता है जिसके विषय में सूचनाएँ हमें समकालीन मनीषियों के द्वारा लिखे गये साहित्यों से होती है। किन्तु इस प्रकार के साहित्यों में कौन सी सामाग्री इतिहास लेखन में सहायक सिद्ध होगी इसका निर्धारण कर पाना कठिन कार्य है। इतिहास लेख या इतिहासिकी का शाब्दिक अर्थ इतिहास लेखन की कला है। यह इतिहास का इतिहास या इतिहास लेखन का इतिहास है। इतिहास लेख ऐतिहासिक लेखन के विकास क्रम की कथा कहता है। इतिहास के लेखन से सम्बधित बदलते विचारों और तकनीकों तथा स्वयं इतिहास के प्रति बदलते रूख भी इसमें शामिल हो गये हैं। अतः यह मनुष्य के अतीत बोध के विकास का अध्ययन है। अलग–अलग युगो और अलग–अलग लोगों के ऐतिहासिक साहित्य की प्रकृति गुणवत्ता और मात्रा में अन्तर है। ये भिन्नताएँ सामाजिक जीवन और मान्यताओं तथा इतिहास बोध की उर्पिस्थति या अनुपास्थिति से प्रतिबिंबत होती है। दुनिया के विभिन्न जन समुदायों और विभिन्न काली में अतीत का जिज्ञासु बोध यानी ऐतिहासिक बोध एक समान मौजूद नहीं रहा है। प्राचीन यूनान एवं रोम तथा यहूदी एवं ईसाई धर्मों ने यूरोप से शक्तिशाली इतिहास बोध विरासत में लिया है किन्तु यदि प्राचीन भारत में इतिहास बोध और इतिहास लेखन को देखा जाये तो इस सम्बन्ध में विद्वानों में काफी मतभेद है। विद्वानों का एक बड़ा वर्ग मानता है कि प्राचीन काल में भारतीयों को इतिहास लेखन की समझ नहीं थी। इस प्रकार की सोच रखने वाले विद्वानों में ए बी कीथ विसेन्ट रिमध लोएस डिकिन्सन, विन्टर निज, प्रो. कावेल, मैक्समूलर आदि का नाम उल्लेखनीय है। इन समस्त विद्वानों ने समकालीन विश्व से तुलना के आधार पर इस प्रकार का मत बनाया है। इनके अनुसार प्राचीन भारतीयों के बौद्धिक जीवन की सबसे बड़ी त्रुटि यह थी कि उनकी सभ्यता का सुदीर्घ इतिहास और विकसित चरित्र होने के बाद भी उनके इतिहास बोध और विभिन्न घटनाओं को कालक्रम के अनुसार व्यवास्थित करने की प्रवृत्ति का पूर्णतः अभाव है। इस सम्बन्ध में बी.ए. कीथ ने लिखा है कि भारत का साहित्य पर्याप्त परिमणि में उपलब्ध होने के बाद भी इतिहास का निरूपण इतना सोचनीय है कि संस्कृत साहित्य के सम्पूर्ण महान काल में एक भी लेखक नहीं है जिसे गंभीरता के साथ आलोचनात्मक इतिहासकार के रूप में मान्यता दी जा सके।

प्राचीन भारतीयों में इतिहास बोध और कालक्रमानुसार ऐतिहासिक घटनाओं को व्यवास्थित प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति न होने का कारण विसेष्ट स्मिथ के अनुसार अधिकांश संस्कृत कृतियों की रचना बाह्मणों ने की थी जिनके भीतर इतिहास लिखने के प्रति कोई रुचि नहीं थी बल्कि उनकी रूचि अन्य कार्यों में थी। किसी भी व्यक्ति को अच्छा इतिहास लेखक बनाने में परिवेश और घटनाक्रम की विशेष भूमिका होती है किन्तु प्राचीन भारत में लगातार कुछ न कुछ घटनाएँ गथा विदेशी आक्रमण ।

आदि होते रहे पर इनका प्रभाव भी किसी भारतीय के ऊपर संभवत नहीं पड़ा क्योंकि भारतीय साहित्यों से विदेशी आक्रमण आदि के विषय में बहुत कम सूचना मिलती है इसके विपरित होमर एवं हेरोडोटस जैसे इतिहासकारी को इसी प्रकार की घटनाओं ने प्रभावित किया और इन लोगों ने अपनी लेखनी उठायी और अपनी वेदना को अभिव्यक्त किया। इतिहास बोध का होना न होना अनिवार्यतः किसी जनसमुदाय के विश्वासों और मनोवृत्तियों पर निर्भर है जिन कारकों ने सही अर्थों में प्राचीन भारतीयों में ऐतिहासिक चेतना को अवरूद्ध किया है वे धर्म और दर्शन में निहित हैं। प्राचीन भारतीय प्रमुख धर्मो यथा ब्राह्मण जैन एवं बौद्ध की मान्यता है कि सब कुछ नियति द्वारा निर्धारित है जो कुछ भी हो रहा है वह हमारे पूर्व जन्मों का फल है इस प्रकार की सोच ने निश्चित रूप से ऐतिहासिक मिन्तन को प्रभावित किया । (5) इसके अलावा प्राचीन भारत में जीवन को नकारने का दर्शन प्रबल था। यहीं इस बात पर बल दिया जाना चाहिये कि ऐतिहासिक अनुसन्धान के कार्य में व्यवस्त होने के लिये अर्थात अतीत का ज्ञान हमारी दृष्टि से प्राप्त करने के उद्देश्य से एक अनिवार्य शर्त वर्तमान और भविष्य की समस्याओं में रूचि है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राचीन भारतीयों में यह रूचि उस सीमा तक या उस अर्थ में नहीं थी जिस सीमा तक या जिस अर्थ में यह अन्य मानव समुदायों के सन्दर्भ में दिखाई देती है। भारतीय मानते थे कि वर्तमान जीवन और उसके सभी घटक नश्वर और अस्थायी तथा जन्मों और पुनर्जन्मों की अनंत श्रंखला की एक कड़ी मात्र हैं. उन्होंने जीवन चक्र से मुक्ति को इसका

सबसे बड़ा लक्ष्य माना है विभिन्न संसारिक वस्तुओं और घटनाओं की क्षण भंगुरता या नस्वरता में विश्वास ने एक घोर निराशावादी दृष्टि कोण को जन्म दिया। इस प्रकार मानव अपने इहलौकिक जीवन को नश्वर मानने लगा और इस अस्थायी जीवन के ज्ञान की तुलना में शाश्वत आध्यात्मिक ज्ञान अर्थात ब्रह्मविद्या को सर्वोत्कृष्ट ज्ञान के रूप में प्रतिष्ठा मिली। यह दृष्टि कोण लोगों के मन में समाहित था ऐसी किसी भी धारणा जो शाश्वत जीवन के ज्ञान में वृद्धि करती थी को महत्वपूर्ण माना गया। अत इतिहास जिसकी प्रवृत्ति इहलौकिक थी, केवल ऐसे ही परिवेश में पनप सकता था जहाँ जीवन के प्रति स्वीकारात्मक दृष्टिकोण होता आ पारलौकिक चिन्तन में विश्वास इतिहास विरोधी प्रवृत्तियर्थी है। इन सबके अलावा भारतीय इतिहास की एक और समस्या कालक्रम निर्धारण की है। कालक्रम व्यवस्था की चेतना के अभाव के कारण प्राचीन इतिहास की घटनाओं की तिथियों का सही निर्धारण कठिन हो जाता है।

इतिहास का महत्व तभी होगा जब किसी घटना का तिथि के साथ उल्लेख किया जाये। भारत में कालक्रम निर्धारण सम्बन्धी यह कठिनाई दो प्रकार की देखी गयी है पहली कठिनाई तिथि का उल्लेख एकदम न होने की स्थिति में है जबकि दूसरी में तिथि का उल्लेख यदि किया भी गया है तो वह तिथियों ईसाई या हिजी संवत जैसे हर जगह प्रयोग होने वाले संवतो के अनुसार नहीं है बरिक प्राचीन भाराविक गुर आदि संतो का प्रयोग किया गया है अतः इस प्रकार की तिथियों कोन्विक सहर पर प्रचालित शिवश्री के साथ तुलना कर पाना कठिन कार्य है। प्राचीन भारत में तिथि को लेकर एक और बात देखी गयी है अपने धार्मिक एवं रीति–रिवाजों के पालन के लिये एक हिन्दू समय को लेकर जितनी सतता बरतता है. यह इतिहास के परिप्रेक्ष्य में कतना एकदम अलग है मापदण्ड के एक सिरे पर कालक्रम की गणना यम नादिक विनादिक मुहुर्त आदि जैसे सूम मानकों के रूप में की गयी है. ती वहीं ऐतिहासिक घटनाओं के लिये यह गणना युगों अर्थात सतयुग, द्वार जेता एवं कलियुग के रूप में की गयी है इस प्रकार के तिथि निर्धारण से कभी भी इतिहास सही तरीके से निर्मित नहीं किया जा सकता है। इस मान्यता के विपरित विद्वानी कर एक वर्ग यथा डा. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, डॉ विश्वम्भर शरण पाठक डॉ. एस.पी. सेन, नीलकष्ट शास्त्री ए. बार्डर एवं आर.सी. मजूमदार ने अपनी कृतियों के माध्यम से प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि भारतीय इतिहास लेखन की कला से परिचित थे (6) इन विद्वानों के अनुसार भारतीय इतिहास शास्त्र की अपनी विशिष्ट परम्परा रही है जिसे आधुनिक दृष्टिकोण से देखकर एक पक्षीय घोषणा की गयी है। इतिहास शब्द का प्रथम उल्लेख वैदिक वाङ्मय में हुआ है कि इसकी एक परम्परा विद्यमान थी। वेदों के अर्थ ज्ञान के लिये निरुता की परम्परा रही है वैदिक अर्थी को ऐतिहासिक सन्दर्भ में प्रस्तुत करने वाले का निरुक्ता में कही इत्याख्यानम तथा कहीं इत्यैतिहासिकर कहा गया है। निसककार ने स्वय ही लिखा हैः–

**तत्कोवृत मेघ इति नैरुक्ताः त्याष्ट्रो असुर इत्यैतिहासिकाः (निरुक्त 2/16)**

इसके अलावा कई स्थानों पर निकाह कारन मात्र जेतिहास माकाते इत्याख्यानम का उल्लेख कर इतिहास पक्ष को प्रस्तुत किया गया है। डॉ. विश्वम्भर शरण पाठक का कन्धन है कि भारत में प्राचीनतम ऐतिहासिक साहित्य के रूप में कुछ बिखरे हुये भन्छ है जो तत्कालीन राजाओं के सैनिक अभियानों की प्रशंसा में लिखे गये है। ऋगवेद के सूक्तों में कुछ मन्त्र ऐसे है जिनो दानस्तुति कहा जाता है। इन दान स्तुतियों में ऋगवैदिक कालीन राजाओं के प्रशस्त दान की इस्तुति की गयी है इन सब में ऐतिहासिकता समाहित है। इसके अलावा ऋगवेद के मण्डलो के ऐतिहासिक अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि इसके प्रत्येक मण्ड़ल का सम्बन्ध किसी ऋषि या उनके वैशजों से है। अत वंश मण्डल के आधार पर ऋषि वंश के ऐतिहासिक वंश परम्परा का ज्ञान होता है। वैदिक इतिहास शास्त्र के निर्माण में गाथा परम्परा का विशेष योगदान है। ऋगवेद में गाथ (9/99/4), गाथा (8/71/14), गाथानी (1/43/4) ऋजुगाध (8/92/2) आदि अनेक रूपों में उल्लेखित है और गाथा अवेस्ता का भी प्राचीनतम अंश है। गाथा से तात्पर्य बीरों के गुणगान से है। गाथा का गान अनुष्ठान आदि के अवसरों पर किया जाता था। ऋगवेद में गाथा (10/85/6) नाराशंसी तथा रैंभी का एक साथ वर्णन हुआ है। डा. बलदेव उपाध्याय इसे वैदिक कालीन लौकिक धारा का ऐतिहासिक अंग स्वीकारते हैं जिसमें लोक में ख्याति प्राप्त महान व्यक्तियों का तथा लोक प्रसिद्ध वृत्त का वर्णन करना ही अभीष्ट प्रतीत होता है। उत्तर वैदिक काल में और उसके बाद आख्यान इतिवृतवश और वंशानुचरित पुराण और इतिहास जैसे अन्य सयों का आविर्भाव हुआ इन सभी से कुछ कुछ ऐतिहासिक सामाग्री प्राप्त होती है उत्तर वैदिक काल में राजकीय आधिकारियों का एका महत्वपूर्ण वर्ण सूत था इनका प्रमुख कार्य राजाओं एवं पुरोहितों की वंशायलियों की रचना और संकलन करना था। राष्ट्रवादी विचारकों की एक और अवधारणा रही है कि प्राचीन भारत के समृद्ध इतिहास का प्रतिनिधित्व पुराण करते है। पुराण का अर्थ है प्राचीन जनश्रुति ऐसा प्रतीत होता है कि वाचिक परम्परा के सबसे आरम्भिक रूपो अर्थात गाथा, नाराशसी आरव्यान इतिवृत और वंशानुचरित को पुराण में समविष्ट कर लिया गया था। पुराण के विषय में नामलिंगअनुशासनम्'' में वर्णित है–

सर्गश्च प्रतिसर्गश्व वंशो मन्वंतराणि चा।
वशानुचरितम चौव पुराणम पंचलक्ष्णम।।

अर्थात बह्माण्ड की उत्पत्ति, प्रत्येक कल्प के अन्त में बह्माण्ड का धीरे धीरे चरणबद्ध विकास और पुनर्रचना, देवर्ताओं और ऋषियों की वंशावलियों युगों के चक्र जिसमें मानव जाति का नए सिरे से सृजन होता है और प्राचीन कालों से शासन करते आ रहे लोगों की वंशावलियों पुराण के पाँच लक्षण है। अतः इसे इतिहास की श्रेणी में रखा जा सकता है।

## निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते है कि प्राचीन भारत में इतिहास बोध के प्रश्न पर विद्वानों का दो वर्ग स्पष्ट रूप से दिखाई देता है एक वर्ग भारतीयों के ऐतिहासिक बोध पर प्रश्न चिन्ह लगाता है जबकि दूसरा वर्ग प्राचीन भारत के लोगों की ऐतिहासिक चेतना को स्वीकार करता है किन्तु इन दोनों मतों की समीक्षा की जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कि अधुनिक काल में जो इतिहास होने के मानक निर्धारित किये गये है उस आधार पर प्राचीन भारत की अधिकांश कृतियों को इतिहास की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, किन्तु प्राचीन भारतीय साहित्यों में ऐतिहासिक सामाग्री निश्चित रूप से उपलब्ध है परन्तु उनका प्रयोग करने के लिये नीर क्षीर विवेकी होना अति आवश्यक है।

## सन्दर्भ सूची

1. बटरफील्ड, हिस्टोरियोग्राफी इन डिक्सनरी आफ हिस्ट्री आफ आइडियाज, बाल्यूम–2, 464
2. ई. श्रीधरन, इतिहास–लेख, पृष्ठ 2
3. कीथ, हिस्ट्री ऑफ सस्कृत लिट्रेचर, 144
4. स्मिथ, आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया, ग्पपप
5. ई. श्रीधरन, इतिहास लेख, 279

6. कुँवर बहादुर कौशिक, इतिहास दर्शन एवं प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन पृष्ठ–98–99
7. पं. रविशंकर मिश्र, वैदिक इतिहासार्थ निर्णय, पृष्ठ–124
8. मणिलाल पटेल, भारतीय अनुशीलन, पृष्ठ-109
9. बी. एस. पाठक, एन्षियण्ट हिस्टोरियन्स ऑफ इण्डिया, पृष्ठ–16
10. बलदेव उपाध्याय, पुराण विमर्श, पृष्ठ–10
11. ई. श्रीधरन, पूर्वोद्धत, पृष्ठ–283